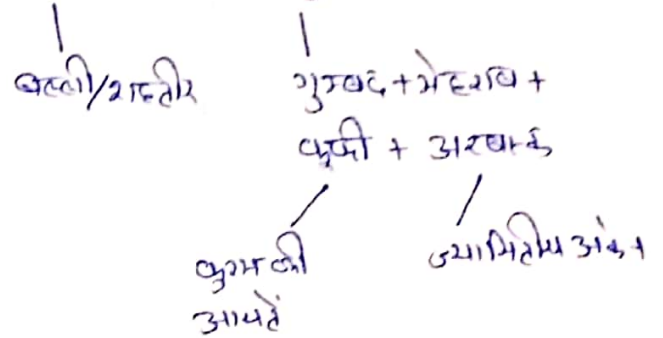
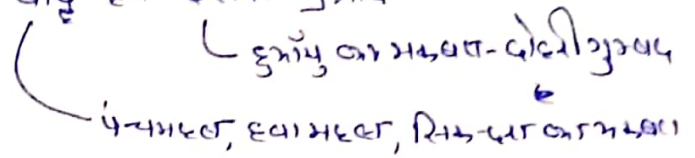


मुगलकालीन स्थापत्य कला - विशेषताएँ

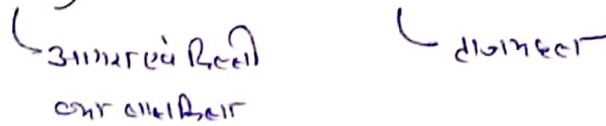
① इण्डो इस्लामिक शैली अर्थात् ताबियह एवं अरबुदह



② इण्डो-इस्लामिक के साध-साध बौद्ध एवं ईशानी प्रभाव



③ लाल बलुआ पत्थर एवं संगमरमर का प्रयोग



④ परम्परागत शहरीर एवं के गुरनुमा प्रणाली

⑤ पॉचमोजिला इमारत - पंचमहल, हवा महल, सिक्-दर का मकबरा

⑥ खिप्रादुर - बहुश्रवण पत्थर एवं कीरे-जवाहर की जड़ावट - शजादुद्दौला का मकबरा

⑦ कुरान की आयतें व ज्यामितीय आंक

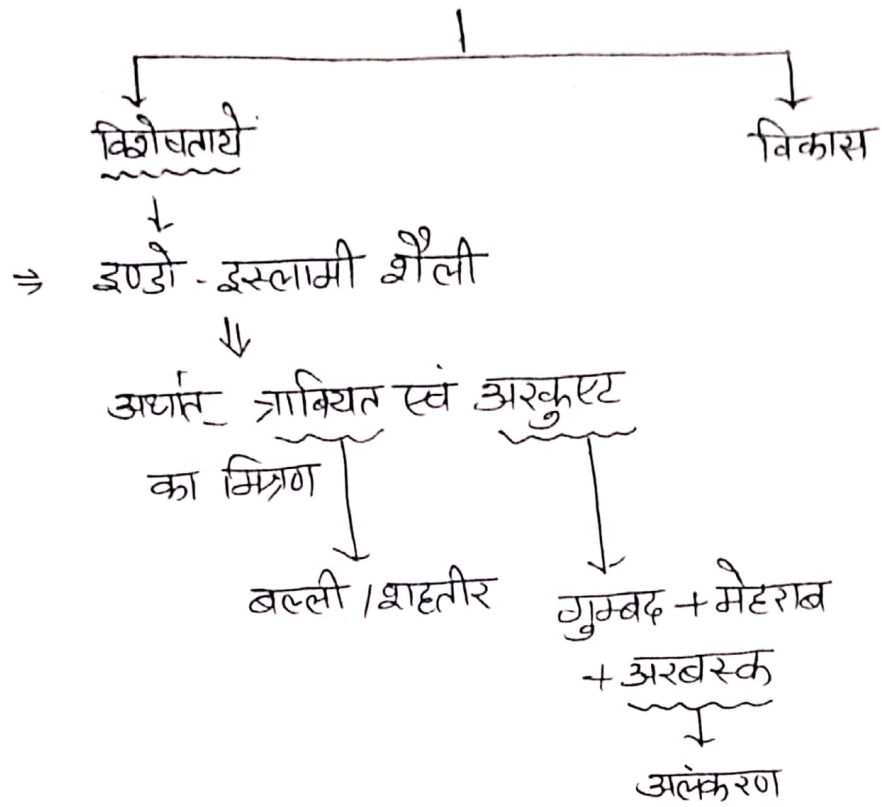
⑧ अमरुदी गुम्बद

⑨ कौहेदार मेहराब

⑩ चारों ओरों पर मीनाट - ताजमहल

⑪ विगुलवी संरचना - ताजमहल एवं जामा मस्जिद

\* स्थापत्य कला \*



- ⇒ बलुआ लाल पत्थर का प्रयोग
- ⇒ चार बाग शैली
- ⇒ फिादुरा शैली का प्रयोग
- ⇒ बढुमूल्य पत्थरों, ~~इन्ही~~ इन्हीं जवाहरात से जड़ावट

विशेषतायें :-

मुगल वास्तुकला में भारतीय इस्लामी शैली का सुंदर समन्वय मिलता है। इसमें हिंदू, बौद्ध, राजपूत, ईरानी वास्तुकला शैलियों का समावेश मिलता है। भारतीय शैली में जावियत (बल्ली व शहतीर) तथा इस्लामी शैली में अरकुएट (गुम्बद एवं मैहराब) तथा इसमें अलंकरण के लिए अरबस्क शामिल है। इन्हीं का समन्वय मुगल स्थापत्य में मिलता है।

⇒ मकब्रों में अधिकोशत ब्लुआ पत्थर एवं संगमरमर का प्रयोग किया गया और संगमरमर पर हीरे-जवाहरात से की गई जड़ावट पिनादुरा के नाम से जानी जाती है।

⇒ लौहियों के समय शुरू हुई 'चार बाग शैली' का यहाँ पूर्ण विकास दिखाई पड़ता है। इमारत के बाहरी तरफ बग के लिए भूमि छोड़ी गई और मह्य में भवन बने।

### विकास-

बाबर एवं हुमायूँ के काल में वास्तुकला का विकास आरम्भ हुआ। किंतु युद्धों में संलग्न रहने के कारण व्यापक पैमाने पर निर्माण कार्य नहीं हो सका। अकबर के काल में इसका विकास हुआ और अकबर भवन निर्माण पर विशेष बल देता था। अबुल फजल ने लिखा कि "बादशाह सुंदर भवनों के निर्माण की योजना बनाता है तथा अपने मस्तिष्क एवं दृश्य के विचारों को पत्थरों से रूप प्रदान करता है।" फतेहपुर सीकरी में बने भवन अकबर को भवननिर्माता की कोरि में रखते हैं जहाँ पंचमहल, जहाँगीरी महल, बीरबल की काठी, बुलंद दरवाजा आदि बने हुए हैं।

⇒ अकबर के काल में हुमायूँ के मकबरे का निर्माण हाजी बेगम ने कराया। इसमें ईरानी शैली पर



आधारित शुभवर्णों का प्रयोग किया गया। इसे तजमहल का पूर्व रूप माना जाता है। तजमहल को यदि एक वफादार आधिक का खिराज कहा जा सकता है तो हुमायूँ के मकबरे को एक वफादार बीबी की महबूबाना पैशाकशा कहा जा सकता है।

⇒ जहाँगीर के काल में - इस काल में सिकंदरा स्थित अकबर का मकबरा बनाया गया जिसमें निर्मित जालियाँ अत्यंत उल्लेखनीय हैं। इसी समय बुरजहाँ द्वारा आगरा में एतमाउद्दौला का मकबरा बनवाया गया जिसमें पहली बार पित्रादुरा बीली का प्रयोग किया गया है।

# शाहजहाँ के काल में - शाहजहाँ का काल मुगल स्थापत्य का स्वर्णकाल माना जाता है। रोमन सम्राट आगस्टस ने कहा कि "मैंने ईट का रोम पाया था और उसे संगमरमर का बना दिया"। उसी तरह शाहजहाँ ने भी फ़र्शों से निर्मित मुगल नगरों को पाया और उसे संगमरमर से सजाया। शाहजहाँ के स्थापत्य के संदर्भ में यह कहा जाता है कि यदि सम्पूर्ण ऐतिहासिक साहित्य नष्ट भी हो जाये तो शाहजहाँकालीन स्थापत्य तत्कालीन इतिहास का वर्णन करने में पूर्ण सक्षम है।

⇒ शाहजहाँ के काल में संगमरमर का व्यापक

प्रयोग हुआ और ये संगमरमर मकराना से आते थे। साथ ही पित्रादुरा शैली का आकर्षक प्रयोग किया गया। ताजमहल इस निर्माण का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इसी तरह महलों में अब बहुस्तरीय मेहराब का प्रयोग किया गया और बंगाली शैली में मुड़े हुए कंगूरी एवं चज्जेदार छतों का प्रयोग किया गया।

⇒ इस काल में दिल्ली का लाल किला, रंगमहल, जामा मस्जिद अत्यंत विशाल और उल्लेखनीय अवन हैं। आगरा में निर्मित ताजमहल को विद्वान हॉवेल ने 'भारतीय नारीत्व की साकार प्रतिमा' कहा। वस्तुतः यह अवन मुगल काल में नारी के प्रति सम्मान को दर्शाता है।

# औरंगजेब के काल में :- मुगल वास्तुकला ने बाबर, हुमायूँ के काल में आरंभ की। अकबर, शाहजहाँ के संरक्षण में इस कला ने अपनी बुनावस्था को प्राप्त किया। तो औरंगजेब के काल में इसकी वृद्धावस्था को प्राप्त किया। इस काल में राजनीतिक, आर्थिक कारणों से परिचालित होकर औरंगजेब ने अवन निर्माण में रुचि नहीं ली। फिर भी औरंगाबाद में 'शबिया उद्दरौनी का मकबरा' निर्मित कराया। इसे दूसरा ताज कहा जाता है जिसे ताज की अर्द्धी नकल कहा जाता है। तो लाहौर में बादशाही मस्जिद का निर्माण कराया।